MINOR RESEARCH PROJECT

With the Financial Assistance of

U.G.C.

File No. 23 – 151 / 12 (WRO)

Date : 05-02-2013

"दाहोद जिले के सामाजिक चेतना में कबीर सम्प्रदाय की भूमिका"

FINAL REPORT

Researcher

Dr. G.M.Chandel

Department of Hindi

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

ZHALOD RAOD, LIMKHEDA-389140

Distt. DAHOD (GUJARAT STATE)

Final Report

Minor Research Project

"दाहोद जिले के सामाजिक चेतना में कबीर सम्प्रदाय की भूमिका"

पूर्व भूमिका:

शिक्षक परिवार का संस्कार लेकर मैं आर्ट्स कॉलेज लीमखेड़ा से जुड़ा। यहाँ आने के बाद मैंने यहाँ के सामाजिक वातावरण को नजदीक से देखा। इस जिले में आदिवासियों के साथ अन्य कई पिछड़ी जातियों के लोग रहते हैं। इनका सांस्कृतिक धरातल एक है। इन सब में प्रेम, परिश्रम और परंपरा के प्रति गहरा लगाव दिखता है। यहाँ के लोगों के स्वभाव में दृढ़ता और निर्भिकता, सहजता और उदारता के गुण विद्यमान हैं जो कहीं न कहीं इनमें संत भावना के प्रभाव को झलकाते हैं। ये सभी बातें मुझमें इनके सामाजिकता के प्रति ललक पैदा करती रही हैं। अपने कॉलेज के आचार्य आदरणीय श्री गोपाल शर्मा जी की प्रेरणा और मित्रों के उत्साहवर्धन से शोधकार्य के प्रति जिज्ञासा और भी बलवती होती गई एवं अवसर पाकर इस शोधकार्य में लग गया।

विषय चयन:

कोलेज से जुड़ने और विद्यार्थियों के सम्पर्क में आने से अक्सर यह लगता था कि इन विद्यार्थियों में 'कबीरभाव' भरा पड़ा है। अभिभावकों और अन्य लोगों के सम्पर्क से यह ज्ञात हुआ कि इस जिले में कबीर सम्प्रदाय की गहरी पैठ है, इसलिए उसका प्रभाव होना लाजमी है। 'कबीर की प्रासंगिकता' आज हिन्दी साहित्य का बहुचर्चित विषय बन पड़ा है। परन्तु कबीर के सामाजिक धरातल की पहचान मुझे यहाँ हुई। अब दाहोद जिला और कबीर सम्प्रदाय के सम्बन्ध में विचार करने लगा। जब शोधकार्य का यह अवसर आया तो मैं इस सम्बन्ध में डॉ. श्री जिलेदारसिंह (प्रोफे.मालवण कॉलेज) से मिला। उन्होंने इस सन्दर्भ में कई विषय सुझाये, किन्तु चर्चा करने के बाद हमने -

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

"दाहोद जिले के सामाजिक चेतना में कबीर सम्प्रदाय की भूमिका"-शीर्षक को निश्चित किया। इस तरह से इस शोध प्रबन्ध का विषय है-

शीर्षक -**"दाहोद जिले के सामाजिक चेतना में कबीर सम्प्रदाय की भूमिका"**

यह विषय अपने आप में नवीन है। इस तरह से विषय-चयन का कार्य सम्पन्न होने से हर्ष का अनुभव हुआ।

प्रस्तुत शोध कार्य का महत्व:

कबीरदास की वाणी कई शताब्दियों से जनमानस को प्रभावित करती रही है। उनकी वाणी के वाहक बने हैं उनके शिष्य। दाहोद जिला जो आदिवासी बहुल जिला है यहाँ भी कबीर सम्प्रदाय अपनी गहरी पकड़ बनाए हुए है। प्रस्तुत शोध कार्य के द्वारा दाहोद जिले के सामाजिक चेतना में कबीर सम्प्रदाय की भूमिका को परखने की कोशिश की गई है।यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि केवल कबीर सम्प्रदाय ही क्यों?

मैं हिन्दी का विद्यार्थी रहा हूँ और अब अध्यापक भी हूँ। कबीर का व्यक्तित्व हमेशा मुझे प्रभावित करता रहा है। संत कवियों में कबीर का प्रभाव बड़ा व्यापक रहा है। यहाँ दाहोद में कबीर सम्प्रदाय की शिष्य परम्पराएं देखने को मिलती हैं जो इस विस्तार में अपना धार्मिक प्रचार-प्रसार करती हैं। इसलिए इनके बारे में जानना आवश्यक लगा। इसी कारण कबीर सम्प्रदाय को केन्द्र में रखा गया है। दाहोद जिले को जोड़कर विषय की मर्यादा को निश्चित कर दिया है।

यह शोधकार्य, साहित्य और समाज को एक धरातल पर रख कर देखने का प्रयत्न मात्र है। कबीर की विचारधारा और कबीर का मानवतावाद आज किस प्रकार आदिवासी बहुल जिले को प्रभावित कर रहा है यह व्यक्त करना इस शोध कार्य की मूल भावना है। इस जिले में कबीर के विचारों के वाहक - कबीरपंथी, कबीर के अनुयायी या कबीर सम्प्रदाय किस तरह से सामाजिक बदलाव के कारण बने हैं यह परखना इस शोध कार्य का विषय है। यहाँ कबीर सम्प्रदाय ने 'सत्यनाम' को आम आदमी तक पहुँचाया है।

कहते हैं, शोध कार्य से ज्ञान की क्षितिज का विस्तार होता है। इस शोध कार्य से दाहोद जिले के समाज और संस्कृति, कबीर और कबीर सम्प्रदाय आदि को भली-भाँति जाना जा सकता है। इतना ही नहीं कबीर सम्प्रदाय की सामाजिक भूमिका और उसकी

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

दशा और दिशा पर भी प्रकाश डाला गया है। इससे सम्प्रदाय की जिम्मेदारियों से परिचित हुआ जा सकेगा।

इस शोध कार्य द्वारा हिन्दी साहित्य, कबीर सम्प्रदाय तथा दाहोद जिले के प्रति रूचि लेने वालों के ज्ञानकोश का विस्तार होगा। यह कार्य इस जिले में 'सत्यनाम' के सामाजिक प्रभाव को परखने में अपना महत्व रखता है।

कबीर और कबीर सम्प्रदाय:

भारत का कोई ऐसा कोना न होगा जहाँ कबीर और उनकी वाणी की अनुगूँज न उठती हो। संत कबीर निर्गुण भक्तिधारा के प्रवर्त्तक कवि हैं। वे भक्त, समाज-सुधारक और कवि तीनों एक साथ हैं। डॉ.नगेन्द्र ने लिखा है- 'भारतीय धर्म-साधना के इतिहास में कबीरदास ऐसे महान विचारक एवं प्रतिभाशाली महाकवि हैं जिन्होंने शताब्दियों की सीमा का उल्लंघन कर दीर्घकाल तक भारतीय जनता का पथ आलोकित किया और सच्चे अर्थों में जनजीवन का नायकत्व किया।

कबीर अपने समय के एक नये ढंग के भक्त और सन्त थे, जो जनसामान्य की मुक्ति और उद्धार के लिए ही क्रियाशील थे। एक ओर तो वे सामाजिक समस्याओं से टकराते हैं तो दूसरी ओर लौकिक तथा भौतिक धरातलों से ऊपर उठकर आत्मा, परमात्मा, ज्ञान और मुक्ति की बातें करते और कहते हैं। शायद कबीर ही भारत के पहले भक्त, संत और कवि हैं जिनके लिए आत्मविश्वास, आत्मजागरण के साथ-साथ जन साधारण का भी उतना ही महत्व है।

कबीर के बाद उनके अनुयायियों ने उनकी विचारधारा को जनसामान्य तक पहुँचाने का कार्य किया। इनमें सूरतगोपाल और धर्मदास का नाम महत्पूर्ण है। इन्होंने कबीर सम्प्रदाय का खूब प्रचार-प्रसार किया। सूरतगोपाल की अपेक्षा धर्मदास की शाखाओं ने समूचे देश में अपनी जड़ें मजबूत कीं। इन दोनों शाखाओं का लक्ष्य था अशिक्षित जनता में जागृति लाना। आत्मजागरण के साथ सत्य का निरूपण करना, कथनी और करनी के तारतम्य पर बल देना और नाम माधुर्य को जानना। आज भी यह सम्प्रदाय साधारण जनता में उनकी बोली-भाषा में कबीर के विचारों को पहुँचा रहा है। कहना न होगा कि यह वह प्रकाश स्तंभ है जो निराशा, वासना, प्रतिशोध और प्रति

ARTS COLLEGE

हिंसा के अंधकार में भटकते हुए मानव-समाज को शताब्दियों से प्रकाश दे रहा है और भविष्य में भी मार्ग प्रर्शित करता रहेगा।

दाहोद जिला और कबीर सम्प्रदाय:

दाहोद गुजरात का आदिवासी बहुल जिला है। यहाँ यह उगते सूर्य का प्रदेश माना जाता है। ता. 02.10.1997 को पंचमहाल जिले से अलग इस जिले की रचना हुई। इस जिले में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, बक्षीपंच और अन्य पिछड़ी जातियाँ रहती हैं। पशुपालन और खेती यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय है। यह जिला अपने सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ के लोगों में मेला, हाट-बाजार के प्रति काफी आकर्षण देखा जाता है। यहाँ के लोग अपने प्रेम, परिश्रम और परंपरा के लिए जानेमाने जाते हैं। इस विस्तार के लोगों में संतो और संतवाणी का प्रभाव लक्षित होता है। यहाँ स्वामीनारायण सम्प्रदाय, रामदेवपीर सम्प्रदाय, गायत्री सम्प्रदाय, योगेश्वर सम्प्रदाय, राधास्वामी सम्प्रदाय, कबीर सम्प्रदाय अपने-अपने ढंग से अपने सम्प्रदाय की बातें और धार्मिक प्रचार-प्रसार करते हैं।

दाहोद जिले में कई कबीर मंदिर और आश्रम विद्यमान हैं। ये सभी अलग-अलग अखाड़ों की देख-रेख में अपना क्रिया-कलाप करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य है जनसामान्य में 'कबीर वाणी' का प्रचार-प्रसार करना। एक ऐसे धार्मिक आन्दोलन को उपस्थित करना जिसमें मानव की प्रतिष्ठा हो। यहाँ के लोगों में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जागृत कर मानवता की अलख जगाना।

दाहोद जिले में धर्मदास की शाखा का प्रचार-प्रसार अधिक है। अहमदाबाद स्थित सांकड़ी शेरी अखाड़ा द्वारा संचालित 'सालिया' का कबीर मंदिर इस विस्तार का बड़ा कबीर मंदिर है। इसकी महंत परंपरा भी मिलती है, जिसका निरूपण शोध-प्रबन्ध में किया गया है। इस विस्तार में सर्वप्रथम मयादास साहब धार्मिक प्रचार के लिए आये थे। उस समय के आस-पास ही अन्य अखाड़ों के महंत भी आये जो दाहोद के अलग-अलग विस्तारों में मंदिरों और आश्रमों का निर्माण करके अपना धार्मिक प्रचार कर रहें हैं। यहाँ कम्बोई, केलिया, फतेपुरा, जेसावाड़ा, पुवांडा, वांसिया आदि के कबीर मंदिर धार्मिक आस्था के केन्द्र बने हुए हैं। यहाँ लगभग साठ प्रतिशत धर्मदासी और चालीस

ARTS COLLEGE

प्रतिशत श्रुतगोपाली शाखा के अनुयायी हैं। इन कबीर पंथियों में अखाड़े के अतिरिक्त अन्य कोई भेदभाव नहीं है। ये यहाँ कबीर की विचारधारा के वाहक हैं।

दाहोद जिले के सामाजिक चेतना में कबीर सम्प्रदाय की भूमिका:

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी तथा क्षितिमोहन सेन ने कबीर के गुजरात एवं सौराष्ट्र भ्रमण का उल्लेख किया है। कुछ लोग कबीर के पुत्र कमाल द्वारा गुजरात में कबीर मत के प्रचार का उल्लेख करते हैं। आज गुजरात में कबीर पंथ की एक सुदीर्घ परंपरा देखने को मिलती है।

समस्त गुजरात में कबीर सम्प्रदाय के अनेक पंथ-उपपंथ हैं। किन्तु दो पंथों का नाम विशेष रूप से लिया जाता है- (1) रामकबीरियापंथ और (2) संतकबीरियापंथ। कबीर को राम का अवतार मानने वाले रामकबीरिया हैं। इसके मूल प्रवर्तक के रूप में कबीर के शिष्य पद्मनाभ का नाम लिया जाता है। सतकबीरिया पंथ का प्रवर्तन धर्मदास ने किया था। इसके अनुयायी अपने गुरू की तस्वीर अथवा मंत्र देने वाले गुरू की पूजा करते हैं।

दाहोद जिले में लगभग 150 वर्ष पूर्व कबीर सम्प्रदाय ने अपनी नींव रखी। धरमदासी शाखा के मयादास साहब यहाँ आये थे। जिनका सम्बन्ध सांकड़ीशेरी अहमदाबाद से था। इसकी यहाँ एक महंत परंपरा मिलती है। अन्य अखाड़ों के महंत भी लगभग उसी समय यहाँ आये थे और यहाँ के विविध विस्तारों में अपना धर्म-प्रचार करते थे। किन्तु इनकी संख्या बहुत कम है। इस विस्तार में सांकड़ी शेरी अहमदाबाद की शाखा का प्रचार-प्रसार अधिक है। यहाँ के भक्तों में लगभग साठ प्रतिशत लोग इसी शाखा से जुड़े हैं। यह शाखा यहाँ 'सत्यनाम' के नाम का प्रचार करती हैं। यहाँ सालिया में इस शाखा का बड़ा कबीर मंदिर है। इसके महंत श्री ऋषिकेशदासजी हैं। जो महंत श्रीज्ञानीदास साहब के शिष्य हैं।

दाहोद जिले के कबीर पंथियों में सभी जातियों के लोग मिल जायेंगे। किन्तु इस जिले की समूची 'कोणी जाति' कबीर सम्प्रदाय से जुड़ी है। इस जाति ने आदिवासी बहुल इस जिले में कबीर के विचारों का अनुशरण किया और कबीर सम्प्रदाय से जुड़ कर मानवता की अलख जगायी। इससे यहाँ समाज में काफी परिवर्तन आया है। कबीर

ARTS COLLEGE

सम्प्रदाय के प्रभाव से इनके भोजन, वेश, भाव और भाषा का परिवर्तन स्पष्ट दिखता है।

प्राणी अपने आहार से अपनी वृत्तियों का परिचय देता है। आहार के आधार पर किसी को देवता तो किसी को राक्षस, किसी को अहिंसक तो किसी को हिंसक की कोटि में रखा जाता है। यहाँ के आदिवासी तथा पिछड़ी जातियाँ जो कभी मांस, मदिरा, नशा आदि का सेवन करती थीं तथा हिंसा और प्रतिशोध उनेक लिये सामान्य बात थी। आज कबीर सम्प्रदाय के प्रभाव से यहाँ के लोग शाकाहार की ओर जुड़े हैं। जो आदिवासी कभी गाढ़े रंग के कपड़े पहनता था वह आज सफेद कपड़े पहनने लगा है। यह सफेद रंग उनके सादगी और सात्विक वृत्ति का परिचाय बन गया है। आज ये आदिवासी भजन-कीर्तन, नाम-स्मरण और 'सत्यनाम' का जाप कर रहें हैं। कबीर सम्प्रदाय से जुड़े हुए लोग आज शिक्षा, दीक्षा, नौकरी, धन्धा में काफी आगे हैं। इनका परिवार व्यसन से दूर है और परिवार में सुख-शांति है। निश्चित ही कबीर सम्प्रदाय ने यहाँ 'सर्वेभवन्तु सुखीनः', 'सर्वे सन्तु निरामया' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को प्रश्रय दिया है। कहना न होगा कि यहाँ का कबीर सम्प्रदाय निराशा, वासना, प्रतिशोध और प्रतिहिंसा के अंधकार में भटकते हुए मानव समाज को अध्यात्म का प्रकाश प्रदान कर जीवन का सरल मार्ग प्रशस्त किया है।

यह शोध प्रबन्ध सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक रूपधारण कर सके इस उद्देश्य से प्रतिपाद्य विषय को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है और आवश्यकतानुसार चित्र भी रखे गये हैं। अध्याय का वर्गीकरण इस प्रकार है-

अध्याय -1 दाहोद जिलाः समाज और संस्कृति

अध्याय - 2 दाहोद जिला और कबीर सम्प्रदाय

अध्याय - 3 कबीर सम्प्रदाय की सामाजिक भूमिका

अध्याया - 4 सामाजिक चेतनाः दशा और दिशा

अध्याय - 5 उपसंहार

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

अब प्रत्येक अध्याय का संक्षिप्त सार यहाँ प्रस्तुत है-

अध्याय - 1

दाहोद जिला : समाज और संस्कृति

इस अध्याय में दाहोद जिले का सामान्य भौगोलिक परिचय कराते हुए उसके पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व को निरूपित किया गया है। इसमें यह बताने की कोशिश की गई है कि दाहोद उगते सूर्य का प्रदेश और गुजरात का प्रवेश द्वार है। यहाँ ऋषि दधीचि ने अपनी हड्डियों का दान दिया था जिससे धनुष बनाकर देवताओं ने वृत्तासुर नामक राक्षस का संहार किया था। मुगल बादशाह जहाँगीर मांडवगढ़ जाते समय यहाँ से होकर निकला था और यहीं औरंगजेब का जन्म हुआ था। दाहोद जिला स्वतंत्रता संग्राम और तत्कालीन आन्दोलनों में बढ़चढ़ कर देश की धड़कन से जुड़ा रहा और अपनी आवाज बुलन्द किया। आदिवासी बहुल होने के कारण यह जिला अपनी सांस्कृतिक पहचान रखता है। उसकी संस्कृति पर संक्षेप में यहाँ प्रकाश डाला गया है।

अध्याय -2

दाहोद जिला और कबीर सम्प्रदाय

"दाहोद जिला और कबीर सम्प्रदाय" शीर्षक इस अध्याय में कबीर के जीवन परिचय के साथ कबीर सम्प्रदाय की विवध शाखाओं का उल्लेख किया गया है। कबीर के गुजरात भ्रमण तथा गुजरात में सम्प्रदाय की स्थापना पर प्रकाश डालते हुए कबीर के बारह शिष्यों का सामान्य परिचय दिया गया है। इस अध्याय में ही कबीर की शिष्य परम्परा का उल्लेख करते हुए महत्वपूर्ण दो पंथो - रामकबीरिया पंथ और सतकबीरिया पंथ का उल्लेख करके उसकी शिष्य परम्परा का निरूपण किया गया है। अन्त में दाहोद जिले में विद्यमान कबीर सम्प्रदाय के फैलाव को रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है।

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

अध्याय - 3

कबीर सम्प्रदाय की सामाजिक भूमिका

इस अध्याय में कबीर सम्प्रदाय की सामाजिक भूमिका को समझने का प्रयास है। प्रारम्भ में कबीर के सन्दर्भ में भूमिका बाँधते हुए कबीर की विचारधारा और उनके मानवतावादी अभिगम को समझा गया है। इसके बाद कबीर के सामाजिक सरोकार की चर्चा करते हुए कबीर सम्प्रदाय की भूमिका को स्पष्ट किया गया है। इस अध्याय में यह स्पष्ट करने की कोशिश की गई है कि इस जिले का कबीर सम्प्रदाय किस प्रकार से अपनी सामाजिक जिम्मेदारियाँ निभा रहा है। यह भी समझने की चेष्टा की गई है कि क्या यह सम्प्रदाय लोगों के जीवन में कोई परिवर्तन उपस्थित करता है या नहीं? अन्त में निष्कर्ष दिया गया है।

अध्याय - 4

सामाजिक चेतना : दशा और दिशा

"सामाजिक चेतना:दशा और दिशा" नामक इस अध्याय में सबसे पहले समाज की परिभाषा, चेतना क्या है आदि को समझाने का प्रयत्न किया गया है, फिर सम्प्रदाय के सामाजिक धरातल पर प्रकाश डाला गया है। इतना ही नहीं इसमें सम्प्रदाय के वैचारिक पहल का उल्लेख करते हुए कबीर सम्प्रदाय की सामाजिक चेतना को स्पष्ट किया गया है। अन्त में सामाजिक चेतना की दिशा को परखते हुए कबीर सम्प्रदाय की चुनौतियों का उल्लेख भी किया गया है।

अध्याय - 5

उपसंहार

यह अध्याय उपसंहार का है। इसमें कबीरदास की प्रसिद्ध पंक्तियों को ध्यान में रखकर - 'कस्तूरी कुण्डलि बसै', 'ढाई आखर प्रेम' का तथा 'मन न रंगाये,रंगाये जोगी कपड़ा' - शीर्षक द्वारा अपनी बात कहने का प्रयत्न किया है।

******

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

Annexure - A

Summary of the Project

गुजरात भारत के पश्चिमांचल का एक समृद्ध और सुसंस्कृत प्रदेश है। यहाँ का सांस्कृतिक वैभव सदैव से आकर्षण का केन्द्र रहा है। राजनैतिक इच्छा शक्ति हो या आर्थिक समृद्धि, सामाजिक समरसता हो या धार्मिक उदारता गुजरात हमेशा से पूरे देश को प्रभावित करता रहा है। इसकी धार्मिक सहिष्णुता ने यहाँ अनेक धर्मों-सम्प्रदायों को फलने और फूलने का अवसर प्रदान किया है। इससे इन धर्मों और सम्प्रदायों ने यहाँ की प्रजा के सामाजिक जीवन को काफी प्रभावित किया है।

गुजरात राज्य में आज तैंतीस जिले हैं। इनमें से एक जिला है 'दाहोद'। तारीख 02-10-1997 को पंचमहाल जिले से अलग आदिवासी विस्तारों की पहचान करके इस जिले की रचना हुई। इसको 'उगते सूरज का प्रदेश' और 'गुजरात का पूर्वद्वार' भी कहा जाता है।

दाहोद जिला अपने पौराणिकता और ऐतिहासिकता के लिए भी प्रसिद्ध है। यहीं दूधमती नदी के किनारे ऋषि दधीचि ने तप किया था और दानवों के वध के लिए अपनी अस्थियों का दान दे दिया था। मुगल बादशाह जहाँगीर यहाँ पर पड़ाव डाल कर रहा था और पड़ाव में ही औरंगजेब का जन्म हुआ था। गांधी के सत्याग्रह और ठक्करबापा के भील सेवा मण्डल के साथ यहाँ की प्रजा जुड़ी रही। यह प्रजा अपनी भीलोड़ी संस्कृति के लिए काफी प्रसिद्ध हैं। फिर भी इन्हें हिंसा, चोरी, अंधविश्वास, व्यसन, व्याभिचार आदि के कारण सामान्यधारा से अलग पिछड़ा हुआ माना जाता है।

उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात वैष्णव आचार्यों द्वारा हुआ। यह भक्ति आन्दोलन केवल सिद्धान्त की मंजूषा में ही बन्द रह जाता यदि इसे जन कवियों की वाणी प्राप्त न होती। इन कवियों ने तत्कालीन जन भाषाओं में भक्ति की किरणों का आलोक विकीर्ण कर जन-जन के मानस को पवित्र कर दिया। ऐसे जन कवियों में पहला नाम 'कबीर' का ही है।

ARTS COLLEGE

भारतीय धर्म साधना के इतिहास में कबीरदास ऐसे महान विचारक एवं प्रतिभाशाली महाकवि हैं जिन्होंने शताब्दियों की सीमा का उल्लंघन कर दीर्घकाल तक भारतीय जनता का पथ आलोकित किया और सच्चे अर्थों में जन-जीवन का नायकत्व किया। कबीर का व्यक्तित्व और निर्द्वन्द्व दृष्टिकोण इतना प्रभावशाली था कि उनके विचारों के आधार पर एक सम्प्रदाय चल पड़ा। जिसे संत सम्प्रदाय की संज्ञा मिली। इस सम्प्रदाय में अनेक कवि हुए - दादु, सुन्दरदास, गरीबदास आदि।

कबीर लौह पुरूष थे। सामाजिक उत्थान के लिए उन्होंने भक्तजनों को प्रेम का ढाई आखर याद दिलाया तो साधारण जनता के लिए नैतिक उपदेश दिया। बाह्याचार और भेदभाव बढ़ानेवलों के प्रति व्यंग्यबाण चलाया तो अपने को महापण्डित मानने वालों के समक्ष उलटवासियाँ कहकर उनके पाण्डित्य को चुनौती दी। वे तो सभी को समझाते रहे कि परमात्मा तो सहजता में ही निवास करता है। आत्मसजगता ही कबीर की वाणी का प्राण तत्व है और इस संसार के लिए परम संदेश।

कबीरदास का यह पूरा संदेश उनके शिष्यों ने ही जगत में फैलाया । कबीरदास केवल भारत ही नहीं पूरे विश्व में वंदनीय हैं। भारत और भारत के बाहर कबीर सम्प्रदाय उनके संदेश का प्रचार-प्रसार कर रहा है। उनके उपदेशों में जीवनाभूति का अमर संदेश निहित है।

कबीर की मृत्यु के पश्चात् अनेक शाखाएँ निकल पड़ीं। इनमें से आज भी लगभग चालीस से अधिक संतमतों का उल्लेख मिलता है। जैसे - उदासीपंथ, दादुपंथ, सतनामी पंथ, दरियापंथ, रैदासीपंथ, सत्यनाम पंथ आदि। गुजरात में आज इस सम्प्रदाय के धाम सूरत, भरूच, बड़ौदा, खंभात, अहमदाबाद, नडियाद, मोरबी, भावनगर, जामनगर, राजकोट और जूनागढ़ आदि जगहों पर मिलते हैं। कबीर के बारह शिष्यों में मुख्य रूप से सूरतगोपाल (श्रुतगोपाल) और धर्मदास का नाम लिया जाता है। इन दोनों ने कबीर सम्प्रदाय का काफी फैलाव किया। श्रुतगोपाल (शिष्य गद्दी) की अपेक्षा धर्मदास (वंश गद्दी) शाखा का प्रचार-प्रसार अधिक है। दाहोद जिले में धर्मदासी शाखा का ही प्रचार-प्रसार खूब है। यहाँ का पूरा कोणी समाज कबीरपंथी है।

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

आज इस समाज की शिक्षा-दीक्षा और नौकरी-धन्धे तथा खान-पान पर कबीर पंथ का प्रभाव देखा जा सकता है।

कबीर सम्प्रदाय कबीर की वाणी का अनुशरण और अनुपालन करते हुए उसका प्रचार-प्रसार करता है। मानवता के विकास के लिए राजनीतिक और आर्थिक आन्दोलन ही नहीं आध्यात्मिक आन्दोलन भी अपेक्षित है। मध्यकाल के संतो ने आध्यात्मिक आन्दोलन द्वारा मानवता का विकास किया। भक्ति, आत्मा-परमात्मा, प्रेम भावना, मानव सेवा, मानव प्रेम आदि के द्वारा उन्होंने मानव की प्रतिष्ठा की।

कबीर का धर्म भक्ति और मार्ग प्रेम का था। जहाँ ईश्वर की भक्ति नहीं वह स्थान रहने योग्य नहीं और जहाँ प्रेम नहीं वह स्थान श्मशान के समान है। कबीर का जीवन लक्ष्य बहुत स्पष्ट था। वे मानव धर्म को सबसे बड़ा धर्म मानते थे और प्रेम को सुखद मार्ग। जो व्यक्ति इस मार्ग पर चलता है उसको प्रपंचादि से छुटाकार मिल जाता है। कबीरदास व्यक्ति के उत्कर्ष को सामाजिक उत्थान की नींव मानते थे। इसलिए वे सदैव -प्रणय, दान, दया, अहिंसा, सत्संगति, सदाचार, सत्य, परोपकार, अपरिग्रह, स्तेय, क्षमा, शौच आदि को व्यक्ति जीवन में उतारने की बात करते थे।

दाहोद जिले में सत्यनाम के नाम से कबीर सम्प्रदाय कबीर की विचारधारा का प्रचार-प्रसार करता है। यहाँ के साधु-संत और महंत अपने संदेशों में प्रायः कबीर वाणी का ही आधार लेते हैं। इनसे प्रभावित होकर लोग कंठी धारण करते हैं और गुरूमंत्र लेते हैं। कंठी धारण करने वाला गृहस्थ धर्म का निर्वाह करते हुए साम्प्रदायिक आचरण को भी अपना लेता है। इस तरह से वह विकारों से दूर होने का प्रयत्न करता है। सदाचार, सादगी सेवा और सत्संग उसके जीवन के मूल मंत्र बन जाते हैं। सेवा करने से उसका अभिमान नष्ट होता है। सत्संग उसे जीवन मार्ग बताता है।

दाहोद के आदिवासियों और अन्य पिछड़ी जातियों को कभी क्रूर, हिंसक असभ्य माना जाता था। किन्तु कबीर सम्प्रदाय में जुड़ने के कारण इनके व्यवहार में काफी परिवर्तन आया है। दाहोद जिले का समूचा कोणी समाज कबीर सम्प्रदाय से जुड़ा है। उसके रहन-सहन, खान-पान, तीज-त्यौहार, वेश-भूषा आदि में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। जिसका उल्लेख शोध प्रबन्ध में किया गया है।

ARTS COLLEGE

कबीर जयंति और मगहर संवत्सरी ये दो प्रमुख उत्सव कबीर सम्प्रदाय मनाता है। यहाँ का कबीर सम्प्रदाय इन उत्सवों के अतिरिक्त प्रत्येक पूनम (पूर्णिमा) को भण्डारे का आयोजन और व्रत पूनम का आयोजन करके भोजन और भजन दोनों का लाभ जन समुदाय तक पहुँचाता है। गुरूपूर्णिमा भी यहाँ धूमधाम से मनायी जाती है। इधर कुछ वर्षों से एकता सम्मेलन का आयोजन किया जाने लगा है जिसमें विभिन्न धर्मों के साधु-सन्त उपस्थित होते हैं। इस आयोजन से कबीर सम्प्रदाय को भविष्य की दिशा निश्चित करने का मार्ग मिलता है। यहाँ स्थानिक स्तर पर प्रकाशित 'सद्गुरू कबीर संदेश' त्रिमासिक पत्रिका निश्चित ही कबीर के विचारों के साथ-साथ भक्त जनों की जिज्ञासा को अभिव्यक्ति और संतुष्टि प्रदान करती है। इससे समाज में संवाद का एक माहौल तैयार हुआ है। इस तरह से कबीर सम्प्रदाय के साम्प्रदायिक और गैर-साम्प्रदायिक (रक्तदान, नेत्रयज्ञ, सर्वरोग निदान कैंप, वृक्षारोपण आदि) कार्य इस जिले की सामाजिक चेतना में प्राण फूँक रहे हैं। कबीर सम्प्रदाय के विचारों को वैयक्तिक विचार, सामाजिक विचार, पारिवारिक विचार, आर्थिक विचार और आध्यात्मिक विचार के रूप में देखा जा सकता हैं। जिसे यह शोध प्रबन्ध उजागर करता है।

दाहोद जिले में फैला कबीर सम्प्रदाय इस जिले की तस्वीर बदल रहा है। वह जिले की सामाजिक चेतना में नई ऊर्जा भर रहा है।यह ऊर्जा मनुष्य को शीलवान, निर्भय और सदाचारी बनाती है। यहाँ व्यक्ति विकास के साथ सामाजिक विकास हो रहा है। यहाँ के लोगों में धर्म के प्रति आस्था और आकर्षण बढ़ा है जिससे इनकी क्रूर और हिंसक छवि धूमिल हो रही है। ये 'सत्यनाम' के साथ राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़े रहे हैं और अपनी हिस्सेदारी दर्ज करा रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि वे जिस दिशा में जा रहें हैं उस धार्मिक सत्व को पहचान सकें। इसकी जवाबदारी यहाँ के साधु-संतो और महंतों की है। कबीर की मशाल उनके हाथ में है जो दिशा दिखाती है।

****

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

Annexure- B

Contribution to the Society

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का योगदान:

शोधकार्य की मूलभावना है ज्ञान की क्षितिज का विस्तार करना। प्रत्येक अनुसंधान कार्य अपने आप में शोध की एक कड़ी होता है जिसमें आगे की कड़ियाँ जुड़ती हैं। इसके साथ ही प्रत्येक कड़ी सत्य की स्वतंत्र अभिव्यक्ति भी होती है जो अनुसंधान कर्ता के दृष्टिकोण का परिचायक बनती है। इस कारण शोधकार्य का दायित्व बढ़ जाता है।

प्रस्तुत शोधकार्य अबतक के कबीर पर हुए शोध-कार्यों से अलग है। क्योंकि इसमें कबीर सम्प्रदाय को केन्द्र में रखकर बातें की गयी हैं। इससे संत कबीर जैसे महात्मा के विचारों के साथ ही साथ कबीर सम्प्रदाय की जमीनी हकीकत की पड़ताल संभव हो पायी है। आज 'कबीरदास की प्रासंगिकता' हिन्दी साहित्य का बहुचर्चित विषय बना हुआ है इसलिए यह शोधकार्य उस दिशा में पहल करता है।

भारतीय सामाजिक चेतना की गौरवपूर्ण परम्परा को मध्यकाल के संतो ने नूतन नीति और नैतिकता प्रदान की जिसमें कबीरदास की भूमिका महत्वपूर्ण है। कबीर का पूरा जीवन ही समाज की उन्नति और मगादर्श में व्यतीत हुआ। कबीर ने व्यक्तिवादी चेतना के स्थान पर समष्टिवादी चेतना को प्रधानता दी और समाज के अंधविश्वासों, अत्याचारों, बाह्याचारों से संघर्ष किया। वे इन पर गहरी चोट करते हुए समाज को पुनर्गठित करने का प्रयास किए। कबीरदास की रचना और उसकी वाणी समग्र रूप से सामाजिक चेतना से प्रेरित और अनुप्रमाणित है। वह लोगों के लिए पथ-प्रदर्शक है।

महात्मा कबीरदास ने परमात्मा की भक्ति के लिए मानव और मानवता को महत्व देते हुए सभी जातियों-धर्मों के समावेश पर बल दिया। उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त मंदिर-मस्जिद के भेदभाव को मिटाकर एक ही परमात्मा के सत्य को उजागर किया। जिसका अनुशरण करने पर सामाजिक विषमता दूर होती है और मानव में मानवता का भाव उत्पन्न होता है। ईश्वर और अल्लाह उस एक परमात्मा का ही नाम है

ARTS COLLEGE

जो मानव के हृदय में वास करता है। उसे पहचानना आवश्यक है। उस परमात्मा की प्राप्ति के लिए मानव को अपने भीतर ही खोजना होगा, बाहर मंदिर-मस्जिद में खोजने की आवश्यकता नहीं है।

कबीर का उद्देश्य प्रत्येक जन में ऐसी समझदारी विकसित करनी थी जिसके आलोक में मानव अपनी समस्याओं का समाधान खोज सके। कबीर यदि ब्राह्मण को फटकारते हैं तो इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे ब्राह्मण विरोधी थे। वे ब्राह्मण पर नहीं उसके कार्य पर हमला करते थे जो अपनी स्वार्थपरता के कारण अन्धविश्वास को बढ़ा रहा था और जनमानस को गुमराह कर रहा था। उनका उद्देश्य ऐस ही जातिगत ढोंग का पर्दाफाश करना था जिसके कारण मनुष्य की मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठा समाप्त होती थी। जन सामान्य का ब्राह्मण पर पूर्ण विश्वास था जबकि ब्राह्मण उनके साथ विश्वासघात कर रहा था। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध कबीर की विचारधारा और उनके मानवतावादी अभिगम को उजागर करता है जिससे हिन्दी साहित्य के पाठकों और कबीर सम्प्रदाय के अनुयायियों को लाभ होगा।

इस अनुसंधान कार्य द्वारा दाहोद जिले के सामाजिक चेतना में कबीर सम्प्रदाय की भूमिका के निरूपण से यहाँ के सामाजिक जीवन पर कबीर सम्प्रदाय के प्रभाव को जाना जा सकता है। इस प्रकार यहाँ कबीर सम्प्रदाय के जिज्ञासु पाठक को सम्प्रदाय की विकास रेखा जानने को मिल सकेगी। इतना ही नहीं वह कबीर सम्प्रदाय के विचारों के साथ पुष्ट होते हुए अपने विस्तार और अपने सम्प्रदाय की गतिविधियों का तटस्थता पूर्वक मूल्यांकन भी कर सकेगा।

दाहोद जिले के शोषित, दलित, आदिवासी समाज को जब किसी ऐसे धार्मिक आलंबन की आवश्यकता हुई जो उन्हें वेद,शास्त्र, पुराण आदि ग्रंथो के पठन-पाठन और धामकि कृत्यों से उन्हें अलग न करके मानव समता के आधार पर अपनाता तब कबीर सम्प्रदाय ने उन्हें अपना आलंबन प्रदान किया और 'सत्यनाम' का मंत्र दिया। आदिवासियों में अशिक्षा, कु-प्रथा, चोरी, हिंसा, क्रोध और क्रूरता, मांस -मदिरा सेवन, व्यसन आदि ऐसे दोष थे जो इनके लिए प्रताड़ना और शोषण के कारण बने हुए थे। कबीर सम्प्रदाय ने इन सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हुए इस प्रदेश की जनता

ARTS COLLEGE

को जीवन का सरल मार्ग सुझाया। कबीर सम्प्रदाय की धर्मदासी शाखा आरती वंदन, घंटनाद, पूजा-अर्चना की वे सभी विधियाँ अपने साथ जोड़ली है जो एक वैष्णवभक्त करता था।

आज दाहोद जिले का 'कोणी समाज' कबीर सम्प्रदाय का अनुयायी बन चुका है और उसके जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन लक्षित होते हैं। ये परिवर्तन कबीर सम्प्रदाय के प्रभाव को प्रतिबिम्बित करते हैं। आज जब विश्व कई खेमों में बँटता जा रहा है और आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद के कारण बे-रोक टोक हिंसा बढ़ती जा रही है तब ऐसे समय में संत कबीर और उनकी वाणी परम्परागत बनायी विभाजक हदों को मिटाती है और मानवीय संवेदना के मूल उत्स से जोड़ती है। यहाँ का कबीर सम्प्रदाय उस संवेदना को जगाने और जन-जन तक कबीर वाणी को पहुँचाने का कार्य कर रहा है जो समूचे मानव जाति के लिए आवश्यक है। यह सम्प्रदाय निराशा, वासना, हिंसा और प्रतिशोध के अंधकार में भटकते हुए को मार्ग प्रदर्शित कर रहा है और उन्हें राष्ट्र की सामान्य धारा से जोड़ रहा है। इस अनुसंधान कार्य से निश्चित ही यहाँ के कबीर सम्प्रदाय में दायित्व बोध जागेगा।

******

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

Principal
Arts College,Limkheda
Dist.Dahod,Guj.-389140